13

हिंदी भाषा शिक्षण में कहानी (कंचा) द्वारा शिक्षण के सामाजिक अनुभवों के आधार पर विश्लेषणात्मक अध्ययन

अभिलाषा बजाज*

सभी बच्चे स्वभाव से ही सीखने के लिए प्रेरित रहते हैं और उनमें सीखने की क्षमता होती है। विद्यालय के भीतर तथा बाहर सीखने की प्रक्रिया चलती रहती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 बच्चों के अनुभवों एवं उनकी सक्रिय भागीदारी को महत्व देती है। शिक्षा को एक सक्रिय सामाजिक गतिविधि के रूप में देखते हुए यह पाठ्यचर्या बच्चे की स्वायत्तता, रचनात्मकता, सीखने की सहज इच्छा, उत्सुकता आदि पर बल देती है। विद्यार्थी को जीवन अनुभव प्रदान करने में पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पाठ्यपुस्तकों में ऐसी रचनाएँ हों जिसमें बच्चों की दुनिया को ठीक से समझा गया हो और वह बच्चों की कल्पनाओं को स्थान देती हों। इसी संदर्भ में हिंदी भाषा के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को सामाजिक अनुभव के अवसर प्रदान करने में कहाँ तक सक्षम है? इस पर शोध अध्ययन किया गया। शोध अध्ययन में कक्षा सात की पाठ्यपुस्तक (*वसंत*) में संकलित कहानी 'कंचा' की विषयवस्तु का विश्लेषण एवं विद्यालयी कक्षा अवलोकन किया गया।

पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु के संप्रेषण एवं कक्षा नियोजन में शिक्षक अहम भूमिका निभाते हैं। कक्षा में नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रयोग से अधिगम को रोचक एवं प्रभावी बनाते हुए विद्यार्थी सहभागिता को बढ़ाया जा सकता है। सीखने के अवसरों की बहुलता बच्चे के अनुभवों एवं ज्ञान को दिशा देती है। प्रस्तुत शोधपत्र के अंतर्गत हिंदी शिक्षकों के पाठ संबंधी विचार, कक्षा में उनके द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली शिक्षण विधि एवं पाठ्यपुस्तकों से संबंधित अन्य जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

शोध उद्देश्य

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण के लिए निर्धारित कक्षा सात की पाठ्यपुस्तक (*वसंत*) में संकलित पाठ कंचा की विषय वस्तु का विश्लेषण करते हुए उसमें शामिल सामाजिक अनुभवों के प्रसंगों को समझना।

*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग, बी.ई.एल.ई.डी., अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

© NCERT not to be republished

2. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों के सामाजिक अनुभवों को पाठ्यवस्तु से जोड़कर समझाने की दृष्टि से शिक्षण अधिगम प्रणाली का अध्ययन करना।

इस शोध कार्य में सामाजिक अनुभव से तात्पर्य अपने आस-पास के वातावरण, चीज़ों व लोगों से कार्य व भाषा दोनों के माध्यम से अन्त:क्रिया से होने वाला अनुभव है। स्वयं करके सीखा गया, स्वयं का अनुभव कहलाता है।

कार्यप्रणाली एवं प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध कार्य लेखिका के पी.एच.डी. शोध प्रबंध (शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय 2017) का एक अंश है। शोध अध्ययन में सबसे पहले 'कंचा' कहानी की विषयवस्तु का विश्लेषण किया गया व इसके बाद अनौपचारिक साक्षात्कार के माध्यम से हिंदी भाषा शिक्षकों के पाठ संबंधी मत जाने गए। इसके बाद कक्षा अवलोकन के माध्यम से यह जानने की कोशिश की गई कि क्या शिक्षक, शिक्षण विधि के द्वारा पाठ के उन प्रसंगों पर चर्चा कर पाए, जिनके द्वारा विद्यार्थी पाठ से जुड़ने का अनुभव कर सकें। हिंदी भाषा शिक्षकों की शिक्षण विधियों का अवलोकन करने के लिए एक प्रेक्षण तालिका का प्रयोग किया गया। प्रतिदर्श चयन के लिए यादृच्छिक रूप से प्रतिभा विकास विद्यालय (यमुना विहार), सर्वोदय विद्यालय (रोहिणी) एवं राजकीय विद्यालय (कंझावला) का चयन किया गया। भाषा कक्षाओं के प्रेक्षण के लिए कक्षा संख्याओं का निर्धारण विद्यालयों की सुविधा अनुसार किया गया।

कंचा (कहानी)

टी. पद्भानाभन द्वारा लिखित कहानी 'कंचा' का मुख्य पात्र अप्पू अपनी ही दुनिया में खोया रहने वाला एक ऐसा छात्र है, जिसे रंग-बिरंगे कंचे सदा अपनी ओर आकर्षित करते हैं। गिल्ली-डंडा, कंचे, पिठ्ठू आदि अनेक ऐसे खेल हैं जो गली मोहल्ले में बच्चे बड़े चाव के साथ खेलते हैं। अप्पू को कंचे बहुत लुभाते हैं और वह अकसर अपनी कल्पनाओं में रंग-बिरंगे कंचों की दुनिया में मग्न रहता है। शारीरिक रूप से कक्षा में उपस्थित होने के बावजूद उसका मन कल्पना लोक की उड़ान भरता रहता है।

अपनी बालसुलभ निश्छलता के कारण कक्षा में प्रवेश करने के बाद भी वह अपने विचारों में ही मग्न रहता है। इस कारण अन्य बातों की तरफ उसका ध्यान ही नहीं जाता। कक्षा में अध्यापक के प्रश्न पूछने पर जब वह जवाब नहीं दे पाता (क्योंकि उस समय वह कंचों के विचार में मग्न होता है) तो अध्यापक उसे डाँटते हुए बेंच पर खड़े होने की सजा देते हैं। कक्षा के अन्य छात्र उसका मज़ाक उड़ाते हैं और उस पर हँसते हैं।

प्रस्तुत कहानी में अनेक ऐसे प्रसंग हैं जो विद्यार्थी जीवन में लगभग हर कक्षा के हिस्से होते हैं। टी. पद्भानाभन ने बड़ी सजीवता से बच्चों के मन में चल रहे भाव व इससे जुड़ी सामाजिक कड़ियों को शब्दों का जामा पहनाया है। कहानी को सुनकर और पढ़कर अनायास ही पाठक या श्रोतागण स्वयं को इससे जुड़ा हुआ महसूस करने लगते हैं। मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जो वस्तु उसके पास नहीं होती, वह उसे ही प्राप्त करने को आतुर रहता

© NCERT not to be republished

है। पाठ में अप्पू के मन में कंचों के प्रति लगाव एवं उन्हें प्राप्त करने की कोशिश को दर्शाया गया है। "वह चलते-चलते दुकान के सामने पहुँचा। वहाँ अलमारी में काँच के बड़े-बड़े जार कतार में रखे थे। उनमें चॉकलेट, पिपरमेंट और बिस्कुट थे। उसकी नज़र उनमें से किसी पर भी नहीं पड़ी। क्यों देखे? उसके पिताजी ये चीज़ें उसे बराबर ला देते हैं। फिर भी एक जार ने उसका ध्यान आकृष्ट किया। नया-नया लाकर रखा गया है। पूरे जार में कंचे हैं। हरी लकीर वाले बढ़िया, सफेद गोल कंचे। बड़े आंवले जैसे। कितने खूबसूरत हैं।" (*वसंत*, कक्षा-सात, पृष्ठ 86–87)

एक अन्य प्रसंग में समय से विद्यालय न पहुँच पाने पर अध्यापक जब सजा के तौर पर अप्पू को बेंच पर खड़ा कर देते हैं तो सभी बच्चे उसका मज़ाक बनाते हैं। मास्टरजी द्वारा पूछे गए प्रश्न का जवाब समझ न आने पर मुँह से अनायास एक ही शब्द निकलता है— 'कंचा'। अनेक विद्यालयों की अनगिनत कक्षाओं में अकसर इस प्रकार के प्रसंग दृश्यगत होते हैं जहाँ अपनी बालसुलभ निश्छलता के कारण बच्चे कक्षा में प्रवेश करने के बाद भी अपने विचारों की दुनिया में मग्न रहते हैं। शारीरिक रूप में कक्षा में उपस्थित होने के बावजूद उनका मन कल्पना लोक की उड़ान भरता रहता है।

'कंचा' पाठ का शीर्षक एवं कथ्य वस्तु बच्चों के खेल से संबंधित होने के कारण बच्चों को लुभाती है। लेखक ने अप्पू के माध्यम से बाल सुलभ जिज्ञासा, चंचलता एवं प्रिय वस्तु के प्रति मोह को सामाजिक संदर्भ में बड़ी सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है।

कक्षा प्रेक्षण

विद्यालय संख्या 1

शिक्षक अभिमत

'कंचा' एक ऐसी कहानी है, जिसका मुख्य पात्र अपनी बाल सुलभ चंचलता के कारण सदैव अपनी ही दुनिया में खोया रहता है। रंग-बिरंगे कंचों के प्रति उसके मोह को पाठ में अलग-अलग प्रसंगों के माध्यम से दर्शाया गया है। कंचों से असीम लगाव के कारण वह कक्षा में भी ध्यान नहीं दे पाता और नाराज़ होकर अध्यापक उसको दंड भी दे देते हैं। कहानी बताती है कि बच्चे अपनी आयु के अनुसार आचरण करते हैं और अकसर अपने मन की भावनाओं के आधार पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हैं। शिक्षिका ने यह भी बताया कि हमारी कहानी के मुख्य पात्र अप्पू का पसंदीदा खेल कंचा है।

शिक्षण अधिगम प्रकिया

शिक्षिका ने विद्यार्थियों से पाठ का मुखर वाचन करवाते हुए पाठ से जुडे कुछ प्रश्न पूछे और पाठ की समझ के आधार पर कथ्य से संबंधित अनुभव बताने को कहा। सभी विद्यार्थियों ने अपने अनुभव पूरी कक्षा के सामने रखे। पाठ का भाव स्पष्ट करने के लिए शिक्षिका ने विद्यार्थियों से कुछ प्रश्न भी पूछे जो इस प्रकार हैं—

1. आपका पसंदीदा खेल कौन सा है, घर जाने के पश्चात खाली समय में आप क्या करना पसंद करते हैं?
2. अगर आपका पसंदीदा कार्य करने से आपको रोका जाए तो आपको कैसा लगेगा?
3. पढ़ाई की तरफ ध्यान न देने पर क्या आपको कभी कक्षा में डांट पड़ती है?

© NCERT not to be republished

4. माता-पिता से पूछे बिना, उनके द्वारा दिए पैसों का इस्तेमाल कंचे खरीदने के लिए करने पर क्या अप्पू ने सही किया।

विद्यार्थी सहभागिता

विद्यार्थियों ने कक्षा परिचर्चा में खुलकर भाग लिया। कुछ विद्यार्थियों ने अपने पास-पड़ोस में रहने वाले ऐसे बच्चों के उदाहरण दिए जो अप्पू की ही तरह दिन भर खेलों की दुनिया में मग्न रहते हैं। उनके प्रति उनके परिवारजन के व्यवहार की भी चर्चा अनेक विद्यार्थियों द्वारा की गई। विद्यार्थियों ने अपने अनुभव तो बताए ही, साथ ही शिक्षिका द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी उत्साह से दिए।

पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते समय अधिकांश छात्रों ने गिल्ली-डंडा और क्रिकेट को अपना पसंदीदा खेल बताया। एक छात्र ने पसंदीदा खेल के रूप में 'कंचों' का नाम भी लिया। इस पर शिक्षिका ने टिप्पणी की कि हमारी कहानी के मुख्य पात्र अप्पू का पसंदीदा खेल भी कंचे खेलना ही है और रंग-बिरंगे कंचे उसे सदैव आकर्षित करते रहते हैं। छात्राओं ने पसंदीदा खेल के रूप में रस्सी कूदना तथा स्टॉपू खेलना बताया। चर्चा के आगे बढ़ने पर कुछ छात्रों ने कहा कि अगर अपनी पसंद का काम करने को हमें मना किया जाता है तो हमें अच्छा नहीं लगता और मन उदास हो जाता है। पुनः इस पर टिप्पणी करते हुए शिक्षिका ने अप्पू का जिक्र किया और बताया कि अप्पू को कंचों से बेहद लगाव था और उसका ध्यान सदैव कंचों में ही लगा रहता था। इस कारण उसे अकसर घर में और बाहर डाँट भी खानी पड़ती थी। शिक्षिका की बातें सुनकर एक छात्रा ने बताया कि पिछले महीने जन्मदिन पर अपनी पसंद का उपहार न मिल पाने के कारण वह कई दिन तक परेशान रही और विद्यालय में भी उसका पढ़ने में मन नहीं लगता था। इसी कारण एक दिन कक्षा में शिक्षिका ने उसे डाँटा भी था।

- शिक्षिका ने छात्रा की बात सुनी और उसे समझाया कि कई बार हम अपनी परेशानी को बहुत बड़ा मानकर उससे दुखी होते रहते हैं। जबकि ऐसी परिस्थिति में हमें अपने करीबी मित्र या कोई अन्य जिस पर हमें विश्वास हो, उनके साथ अपनी परेशानी जरूर बांटनी चाहिए। इससे परेशानी का हल तो निकलता ही है, समस्या भी छोटी लगने लगती है। शिक्षिका की बातें सुनकर विद्यार्थियों ने सहमति में सिर हिलाया।
- माता-पिता की अनुमति के बिना सामान खरीदने संबंधी प्रश्न के उत्तर में लगभग पूरी कक्षा ने एकमत से जवाब दिया कि फ़ीस के पैसों से कंचे खरीदने का अप्पू का कदम सही नहीं था। इसी संदर्भ में एक छात्र ने यह भी बताया कि उसके बड़े भाई ने एक बार कॉपी खरीदने के लिए दिए गए पैसों से पतंगें खरीद ली थी। बाद में जब मम्मी-पापा को पता चला तो उसे बहुत डाँट पड़ी थी। इस पर शिक्षिका ने पुनः चर्चा को पाठ से जोड़ते हुए समझाया कि इसी प्रकार फ़ीस के पैसों से बिना मम्मी-पापा को बताए कंचे खरीदने का अप्पू का फैसला भी गलत था। अच्छा होता कि वह कंचे खरीदने के लिए मम्मी-पापा से पैसे माँग लेता।

© NCERT not to be republished

सामाजिक अनुभव सम्मिलित करने संबंधी प्रयासों पर टिप्पणी

विद्यार्थियों के अनुभवों को कक्षा प्रक्रिया में जोड़कर कथ्यवस्तु को स्पष्ट करना शिक्षण की विशेषता कही जा सकती है। अप्पू के बिना बताए फ़ीस के पैसों से कंचे खरीदने संबंधी प्रसंग में विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ जानकर उन्हें सही एवं गलत के विषय में बताना, इसका एक अच्छा उदाहरण रहा। विद्यार्थियों के अनुभवों को विस्तार देने वाले अवसरों को पहचान कर उन से जुड़े प्रश्न पूछ कर शिक्षिका ने अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाया।

विद्यालय संख्या 2

शिक्षक अभिमत

इस कहानी के मूल में एक विद्यालयी छात्र अप्पू है जो दिन-रात रंग-बिरंगे कंचों के विचारों में ही खोया रहता है। कक्षा में जब अध्यापक पढ़ाते हैं तो उस समय भी उसका ध्यान कंचों के खेल में कौन और कैसे जीतेगा तथा किस प्रकार मन को मोहने वाले रंग-बिरंगे कंचों को प्राप्त किया जाए, इसमें लगा रहता है। विधा के कारण यह कहानी विद्यार्थियों को रोचक लग सकती है परंतु साहित्य की दृष्टि से विशेष प्रभावकारी नहीं लगती।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

आरंभ में शिक्षक ने पाठ का शीर्षक बताते हुए आदर्श वाचन की प्रक्रिया आरंभ करने के लिए कहा। लगभग एक तिहाई पाठ के पठन के पश्चात शिक्षक ने इस का सार बताया। सीमित रूप में अप्पू के चरित्र की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि सारा समय कंचों में ध्यान होने के कारण ही अप्पू का ध्यान पढ़ाई में नहीं लगता था और इसी कारण उसे अध्यापक से डांट भी पड़ती थी। इसके पश्चात कुछ और विद्यार्थियों ने पाठ का मुखर वाचन किया और कहानी को पूरा किया। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान शिक्षक लगभग पूरा समय विद्यार्थियों को खेल में समय बर्बाद ना करके पढ़ाई में ही ध्यान देने को कहते रहे। अंत में विद्यार्थियों की पाठ संबंधी समझ जाँचने के लिए अभ्यास प्रश्नों में से कुछ प्रश्न भी पूछे गए, जैसे—

1. दुकानदार और ड्राइवर के सामने अप्पू की क्या स्थिति थी?
2. वे दोनों उसको देख कर क्यों हँस रहे थे?
3. रेलगाड़ी के बारे में बात करते समय मास्टर जी की आवाज़ धीमी क्यों हो गई थी?

विद्यार्थी सहभागिता

शिक्षण प्रक्रिया में मुखर वाचन के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार से विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी दिखाई नहीं दी। मुखर वाचन के दौरान कुछ विद्यार्थियों का उच्चारण भी स्पष्ट नहीं था। शिक्षक ने इस दिशा में कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। शिक्षक द्वारा अप्पू के चरित्र संबंधी चर्चा एवं कंचों के खेल को समय की बर्बादी बताते समय पीछे बैठे अधिकतर छात्र हँस रहे थे। पूछे गए प्रश्न समझ आधारित नहीं थे, वैसे भी केवल कुछ ही विद्यार्थियों ने उनका ज़वाब दिया। एक छात्र ने कहा, "दुकानदार और ड्राइवर के सामने अप्पू किसी भी चीज़ की परवाह नहीं करते हुए केवल अपने कंचो के विषय में ही सोच रहा था और इसलिए वे दोनों उसे देखकर हँस रहे थे।" अन्य

© NCERT not to be republished

छात्रों ने बताया कि क्योंकि मास्टर जी रेलगाड़ी के हर हिस्से के विषय में संजीदगी से बता रहे थे तो उनकी आवाज़ धीमी हो गई थी। शिक्षक की तरफ से छात्रों के उत्तर को प्रतिक्रिया नहीं मिली।

सामाजिक अनुभव सम्मिलित करने संबंधी प्रयासों पर टिप्पणी

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया लगभग नीरस रही। अप्पू के मनोभावों को समझ कर विद्यार्थियों तक संप्रेषित करने का कोई प्रयास नहीं किया गया। शिक्षक इस बात को भी समझाते रहे कि कंचे खेलना समय की बर्बादी है एवं विद्यार्थियों को ऐसे काम छोड़कर अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। शिक्षक अभिमत में भी उन्होंने स्पष्ट बताया था कि इस प्रकार के पाठ साहित्य की दृष्टि से कोई विशेष प्रभावी नहीं लगते। पाठ में अनेक ऐसी संभावनाएँ निहित थीं जिनके माध्यम से विद्यार्थियों के अनुभवों को जानकर शिक्षण में विविधता लाई जा सकती थी परंतु शिक्षक स्वयं ही इन संभावनाओं से अनभिज्ञ से लगे। विद्यार्थियों को पाठ से जोड़ने का कोई प्रयास शिक्षण में परिलक्षित नहीं हुआ।

विद्यालय संख्या 3

शिक्षक अभिमत

पद्भनाभन की कहानी 'कंचा', मूल रूप से मलयालम में लिखी गई है। हिंदी में अनुवाद करते समय कहानी के पात्रों के नाम मूल भाषा में ही रखे गए हैं। कहानी का शीर्षक ही इतना रोचक है कि विद्यार्थी तुरंत पाठ पढ़ने को आतुर हो जाते हैं। इस कहानी के मुख्य पात्र अप्पू को कंचों से बहुत लगाव है और इसी कारण वह कक्षा में पढ़ाई पर भी ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता क्योंकि वह हमेशा कंचों के विषय में ही सोचता रहता है। पाठ में अप्पू की मनोदशा का बेहद सटीक चित्रण किया है क्योंकि इस आयु वर्ग के बच्चों के मन को जब कोई चीज़ मोह लेती है तो वह उसी के विचारों में खोए रहते हैं और उसे प्राप्त करने के तरीके ढूँढते रहते हैं। ऐसी कहानियों से विद्यार्थियों को खेल के साथ-साथ पढ़ाई में भी ध्यान लगाने की बात समझाई जा सकती है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

पाठ आरंभ करने से पहले शिक्षिका ने अनौपचारिक बातचीत के दौरान विद्यार्थियों से उनके द्वारा खेले जाने वाले खेलों पर चर्चा की। किसी ने क्रिकेट, किसी ने बैडमिंटन तो किसी ने खो-खो, चेस एवं पकड़म-पकड़ाई जैसे खेलों के विषय में बताया। विद्यार्थियों की बातें सुनकर शिक्षिका ने कहा कि आज के हमारे पाठ के मुख्य पात्र अप्पू को कंचों का खेल बहुत लुभाता है और वह हर समय रंग-बिरंगे कंचों की दुनिया में ही खोया रहता है। इसके पश्चात शिक्षिका ने मुखर वाचन के द्वारा पाठ का पठन करवाया और पाठ के बीच में आए कुछ मुख्य प्रसंगों की संदर्भ सहित व्याख्या भी की। अप्पू से जुड़े प्रसंगों को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने विद्यार्थियों से उनके स्वयं के अनुभव बताने को कहा, जैसे— शिक्षिका ने पूछा कि क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि कक्षा में पढ़ाते समय आपका ध्यान पढ़ाई में न होकर कहीं और रहा हो? विद्यार्थियों ने इन प्रश्नों के बेहद रोचक जवाब दिए, जिन्हें सुनकर शिक्षिका ने उन्हें अधिगम प्रक्रिया

© NCERT not to be republished

में शामिल कर पाठ को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। शिक्षण के दौरान कक्षा में एक छात्र चुप होकर बैठा हुआ था। शिक्षिका ने उसे इस तरह उदास होकर बैठने का कारण पूछा तो उसने बताया कि अगला पीरियड गणित का है और गणित के सर ने कुछ सवाल करके लाने को दिए थे। शाम को उसने गणित का काम करके कॉपी मेज़ पर ही रख दी और आज बैग में डालना भूल गया। अब जब गणित के सर कॉपी माँगेंगे तो उसे डाँट पड़ेगी, यही सोचकर वह उदास है। शिक्षिका ने उस छात्र की बात सुनते हुए उसे समझाया कि हमें अपनी कॉपी-किताबों एवं अन्य चीज़ों का ध्यान रखना चाहिए। रात को सोने से पहले ही अगले दिन का टाइम टेबल लगा लेना चाहिए ताकि इस प्रकार की समस्या उत्पन्न नहीं हो। साथ ही उन्होंने छात्र को कहा कि गणित के सर को सच बताने पर शायद वह आपकी बात समझ सके और आपको डाँट न पड़े। साथ ही उन्होंने पूरी कक्षा को अपनी चीज़ों के प्रति सचेत रहने की बात भी समझा दी। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए शिक्षिका ने कहा कि जैसे गणित की कॉपी न होने के कारण आज आपका ध्यान कक्षा में नहीं लग रहा है। आपके मन में दुविधा है और अनेक विचार चल रहे हैं ऐसे ही कहानी के मुख्य पात्र अप्पू के मन में भी हमेशा कंचों को लेकर अनेक प्रकार के विचार चलते रहते थे और उसका ध्यान पढ़ाई में नहीं रहता था। अकसर इस कारण उसे शिक्षक से डाँट भी सुननी पड़ती थी। कुछ विशेष प्रसंगों को स्पष्ट करने के साथ-साथ पाठ ही समझ जाँचने के लिए भी प्रश्न पूछे गए, जो इस प्रकार थे—

1. अप्पू कक्षा में देरी से क्यों पहुँचा था?
2. कक्षा में बैठे रहने के बावजूद भी अप्पू का ध्यान कहीं और था, ऐसा क्यों?
3. पिताजी के द्वारा दिए गए फ़ीस के पैसों का अप्पू ने क्या किया? क्या उसका ऐसा करना सही था?
4. क्या आप इस कहानी को कोई और शीर्षक देना चाहेंगे?

प्रश्नों के उत्तर जानने के पश्चात शिक्षिका ने विद्यार्थियों की विषयवस्तु से जुड़ी कुछ अन्य शंकाओं का समाधान किया और उन्हें अपने पसंदीदा खेल के संबंध में एक लघु नोट लिखकर लाने को कहा।

विद्यार्थी सहभागिता

अप्पू से संबंधित चर्चा के समय एक छात्र ने बताया कि जब कभी वह घर से नाश्ता नहीं करके आता तो उसका सारा ध्यान इस तरफ लगा रहता है कि लंच ब्रेक कब होगा। छात्र की बात सुनकर पूरी कक्षा के विद्यार्थी हँसने लगे। इस पर शिक्षिका ने कक्षा के सभी विद्यार्थियों को समझाया कि हमें सुबह घर से निकलने से पहले नाश्ते के रूप में अवश्य कुछ खाना चाहिए अन्यथा दोपहर होने तक हमारे कार्य करने की क्षमता पर इसका असर दिखने लगता है। चर्चा में एक छात्र ने यह भी बताया कि पिछले दिनों इलाहाबाद से उसके मामा जी आए थे और उसके लिए रिमोट से चलने वाला हवाई जहाज़ लाए थे, उन दिनों अकसर कक्षा में बैठकर उसके मन में यही बात चलती रहती थी कि घर पर कहीं उसका छोटा भाई उस हवाई जहाज़ को खराब न कर दें। छात्र की बात सुनकर शिक्षिका ने कहा कि जैसे तुम्हारे मन में हवाई जहाज़ के प्रति

© NCERT not to be republished

एक लगाव हो गया था, वैसे ही अप्पू भी हमेशा कंचों के प्रति ही आकर्षित रहता था और इसी विषय में सोचता रहता था। कोई भी उसको समझने का प्रयास नहीं करता। अगर परिवार के किसी सदस्य ने या स्कूल में अध्यापक ने उससे इस विषय में बात की होती तो स्थिति शायद बेहतर होती।

विद्यार्थियों ने कक्षा में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर बखूबी दिए। जैसे एक छात्रा ने कहा कि जॉर्ज कंचों के खेल में हमेशा जीतता था इसीलिए अप्पू उससे प्रभावित होकर सदा उसी के विषय में सोचता रहता था। एक अन्य छात्रा ने बताया पिताजी द्वारा दिए गए फ़ीस के पैसों से अप्पू का कंचे खरीद लेना सही निर्णय नहीं था। एक अन्य छात्रा ने कहा कि अगर वह अप्पू के स्थान पर होती तो ऐसा करने से पहले अपनी मम्मी को तो ज़रूर बता देती। कहानी को कोई अन्य शीर्षक दिए जाने के संबंध में लगभग सभी विद्यार्थियों ने एकमत से 'कंचा' शीर्षक को ही सबसे उचित शीर्षक बताया।

सामाजिक अनुभव सम्मिलित करने संबंधी प्रयासों पर टिप्पणी

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षिका एवं विद्यार्थियों के अनुभवों को शैक्षिक संसाधन बनाकर कक्षा शिक्षण को उपयोगी बनाने की दिशा में शिक्षिका की भूमिका सराहनीय रही। कभी प्रश्नों के माध्यम से तो कभी प्रसंग को स्पष्ट करते समय, शिक्षिका ने विद्यार्थियों की भागीदारी को सुनिश्चित किया और उन्हें अपने स्वयं के अनुभव बाँटने को भी प्रेरित किया। शिक्षक अभिमत में बताई गई बातें भी शैक्षिक प्रक्रिया में परिलक्षित हो रही थीं। कक्षा में शिक्षिका एवं विद्यार्थियों के बीच का संप्रेषण स्तर प्रशंसनीय था।

निष्कर्ष एवं सुझाव

राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र *भारतीय भाषाओं का शिक्षण* (2009) के अनुसार 'अधिगम प्रक्रिया में नवाचारी शिक्षण प्रकियाएँ अपनाकर शिक्षक, विद्यार्थियों को अपने आस-पास के लोगों एवं वातावरण के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास कर सकते हैं।' कक्षायी शिक्षण अवलोकन प्रकिया के विभिन्न हिस्सों में देखा गया कि विद्यार्थियों के सामाजिक जीवन के अनुभव अधिगम को जीवंत बनाते हैं। अवलोकन के समय एक विद्यालय के शिक्षक ने पाठ में निहित सामाजिक प्रसगों के माध्यम से विद्यार्थियों के अनुभवों को विस्तार देने संबंधी कोई चर्चा नहीं की। अन्य दो विद्यालयों के शिक्षकों ने पाठ को विद्यार्थियों के विचारों से जोड़कर विस्तार दिया। पाठ का नाम स्पष्ट करने के लिए एक शिक्षिका ने विकासात्मक प्रश्न भी पूछे तथा उन्हें पाठ की विषयवस्तु से जोड़कर समझाया। कक्षा समव्यवहार में विद्यार्थी प्रतिभागिता को सुनिश्चित करने की दृष्टि दो विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण में परिलक्षित हुई। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी भी दिखाई दी।

कहा जा सकता है कि पाठ के प्रति शिक्षकों की प्रतिक्रिया कक्षा शिक्षण की प्रक्रिया को प्रभावित करने में अहम भूमिका निभाती है। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि पाठ के प्रति शिक्षकों की सोच एवं नज़रिया कक्षा में विद्यार्थियों के साथ होने वाली अंतःक्रिया पर भी असर डालता है। विद्यार्थियों

© NCERT not to be republished

के मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कक्षाओं में अलग-अलग लेखकों की रचनाओं को संकलित किया जाना चाहिए। कक्षा में इस प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी बात कहने का अवसर मिल सके। अधिगम प्रक्रिया केवल कुछ ही विद्यार्थियों तक सीमित ना रहे। विद्यार्थियों के अनुभवों को संसाधन के रूप में प्रयोग करते हुए अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सकता है। आवश्यकता है कि शिक्षक कक्षा समव्यवहार के दौरान अधिक से अधिक विद्यार्थियों को अपने अनुभव बताने के लिए प्रेरित करें और पुनर्बलन के माध्यम से उनका उत्साहवर्धन करें।

संदर्भ

कुमार, कृष्ण. 2001. *स्कूल की हिंदी*. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.

गुप्त, मनोरमा. 1991. भाषा शिक्षण: सिद्धांत और प्रविधि. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा.

ठाकुर, रवीन्द्रनाथ. 2006. स्कूल मास्टर. *शिक्षा विमर्श,* वर्ष 8, अंक 2, मार्च-अप्रैल, दिगंतर एवं अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का संयुक्त प्रकाशन, जयपुर.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1993. *शिक्षा बिना बोझ के*. यशपाल समिति रिपोर्ट-1993, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प., 2019 *वसंत* (कक्षा 7 की पाठ्यपुस्तक). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

———. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

———. 2009. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. भारतीय भाषाओं का शिक्षण*. राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished